व्याकरण वृक्ष–6

पाठ–1 भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

[Language, Dialect, Script and Grammar]

(क) 1. भाषा वह साधन है, जिसके द्‌वारा मनुष्य अपने मन के भावों तथा विचारों को प्रकट करता है तथा दूसरों के भावों तथा विचारों को समझता है। भाषा के दो रूप हैं– मौखिक व लिखित। मौखिक भाषा में मुख से मन के विचार बोलकर प्रकट किए जाते हैं; उदाहरणार्थ– भाषण देना। लिखित भाषा में विचारों और भावों का प्रकटीकरण लिखकर किया जाता है; उदाहरणार्थ– पत्र लिखना।

2. हमारी राजभाषा हिंदी है।
3. भाषा को लिखने के लिए निर्धारित चिह्न लिपि कहलाते हैं।
4. भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है।
5. व्याकरण की आवश्यकता भाषा को सही ढंग से बोलने व लिखने के लिए होती है।

(ख) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

(ग) 1. अंतरराष्ट्रीय 2. अंग्रेज़ी 3. प्रादेशिक 4. व्याकरण

(घ) गुजरात–गुजराती पंजाब–पंजाबी बंगाल–बांग्ला महाराष्ट्र–मराठी
आंध्र प्रदेश–तेलुगु

(ङ) राजभाषा–हिंदी
अंतरराष्ट्रीय भाषा–अंग्रेज़ी
प्रादेशिक भाषा–पंजाबी
बोली–हरियाणवी

(च) 2. मौखिक भाषा 5. लिखित भाषा
3. लिखित भाषा 6. लिखित भाषा
4. मौखिक भाषा

पाठ–2 वर्ण–विचार [Phonology]

(क) 1. जिन वर्णों को बोलते समय हवा बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकलती है, वे 'स्वर' कहलाते हैं।

2. जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दुगुना समय लगता है, उन्हें 'दीर्घ स्वर' कहते हैं; ये सात हैं– आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ तथा औ।
3. जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ मुख के किसी-न-किसी भाग का स्पर्श करे, उन्हें 'स्पर्श व्यंजन' कहते हैं।
4 वर्ण वह छोटी-से-छोटी ध्वनि है जिसके टुकड़े नहीं हो सकते।
5. एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बने व्यंजनों को 'संयुक्त व्यंजन' कहते हैं।
6. मुख के जिस भाग से जो वर्ण बोले जाते हैं, वह भाग उस वर्ण का 'उच्चारण स्थान' कहलाता है।

(ख) ह्रस्व स्वर – अ, ऋ, इ
दीर्घ स्वर – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(ग) स्पर्श व्यंजन – क, च, थ, न
ऊष्म व्यंजन – श, ष, स, ह
अंत:स्थ व्यंजन – य, र, ल, व

(घ) 1. ऊष्म 2. चार 3. प्लुत 4. दुगुना
5. पद

(ङ) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. ✓

(च) भ-ओष्ठ, न-दंत, क-कंठ, च-तालु, प-ओष्ठ

(छ) 1. (अ) 2. (ब) 3. (द) 4. (अ), (स) 5. (स)

(ज) ग्रह, व्रत, ड्रामा, प्रकाश, प्रेम, ट्रक, ग्रहण, कार्यक्रम

(झ) बाज़ार, आसमान, चिट्ठी, कृपा, पूज्य, आशीष, चाँद, गड्ढा, पेड़

(ञ) 1. स् + आ + क् + ष् + अ + र् + अ
2. ध् + आ + र् + म् + इ + क् + अ
3. ज् + ञ् + आ + न् + ई
4. आ + श् + र् + इ + त् + अ
5. प् + र् + अ + स् + इ + द् + ध् + अ

पाठ-3 संधि [Joining]

(क) 1. दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार या परिर्वतन होता है, उसे संधि कहते हैं; उदाहरणार्थ– शिव + आलय = शिवालय।
2. स्वर संधि के भेद हैं–
(क) दीर्घ संधि– कवि + इंद्र = कवींद्र, रवि + इंद्र = रवींद्र
(ख) गुण संधि– नर + इंद्र = नरेंद्र, हित + उपदेश = हितोपदेश
(ग) वृद्धि संधि– परम + औषध = परमौषध, महा + ओज = महौज
(घ) यण संधि– देवी + आगमन = देव्यागमन, प्रति + एक = प्रत्येक
(ङ) अयादि संधि– पो + अन = पवन, नौ + इक = नाविक
3 संधि के तीन भेद हैं। **स्वर संधि**– महाशय, हरीश; **व्यंजन संधि**– वागीश, जगन्नाथ; **विसर्ग संधि**– मनोयोग, निरर्थक

(ख) सदैव–वृद्धि संधि, देवेंद्र–गुण संधि
सुरेंद्र–गुण संधि, देहांत–दीर्घ संधि
स्वच्छ–यण संधि, सूर्योदय–गुण संधि
पराधीन–दीर्घ संधि, महौषध–वृद्धि संधि।

(ग) वागीश–व्यंजन संधि, प्रत्येक–यण संधि
भावार्थ–दीर्घ संधि, महेश–गुण संधि
परमैश्वर्य–वृद्धि संधि।

(घ) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)
5. (✓) 6. (✗)

(ङ)	अच् + अंत	दुः + कर्म	अति + अंत
	अनु + छेद	दिक् + गज	उत् + लेख
	परम + ईश्वर	दुः + परिणाम	उत् + घाटन।

(च)	निर्धन–विसर्ग संधि	संतोष–व्यंजन संधि
	प्रत्येक–यण संधि	नीरोग–विसर्ग संधि
	संकल्प–व्यंजन संधि	सन्मार्ग–व्यंजन संधि
	मनोबल–विसर्ग संधि	जगदंबा–व्यंजन संधि

(छ) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

पाठ-4 शब्द-विचार [Morphology]

(क) 1. प्रयोग की दृष्टि से शब्दों को दो भागों में बाँटा जा सकता है– विकारी तथा अविकारी।

2. जो शब्द परंपरा से ही किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त हों तथा जिनके टुकड़े करने पर कोई अर्थ न निकलें, वे 'रूढ़ शब्द' कहलाते हैं। उदाहरणार्थ– आम, पशु आदि।

3. वर्णों का सार्थक समूह शब्द कहलाता है तथा शब्दों को जब वाक्य में प्रयुक्त किया जाता है तो वे पद कहलाते हैं। उदाहरणार्थ– 'फूल' शब्द जब तक वाक्य में प्रयुक्त नहीं होता, तब तक इसे पद नहीं कहा जा सकता। किंतु जब वाक्य में इसे प्रयुक्त किया जाता है; जैसे–'बाग में कई फूल खिले हैं,' तब इसे पद कहा जाएगा, शब्द नहीं।

4. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं–

(क) तत्सम शब्द– गृह, नासिका

(ख) तद्‌भव शब्द– मोर, पत्थर

(ग) देशज शब्द– पेड़, गाड़ी

(घ) विदेशज शब्द– साइकिल, फुटबॉल

5. संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द जो अपने मूल रूप में हिंदी में भी प्रयोग में लाए जाते है, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे–मयूर, वानर आदि। संस्कृत भाषा के ऐसे शब्द जिनका हिंदी में आते-आते रूप बिगड़ गया है, तद्‌भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–मोर, बंदर।

6. विकारी शब्दों की पहचान यह है कि ये वचन, लिंग तथा कारक के अनुसार बदल जाते हैं।

(ख)	घी–घृत,	काम–कर्म,	घोड़ा–घोटक,	घर–गृह,
	कुआँ–कूप,	मोर–मयूर		
(ग)	1. देशज शब्द	2. दो	3. अविकारी	4. दो
	5. तीन			

(घ) तत्सम– आम्र, घृत, सूर्य, रात्रि, कूप, दंत, हस्त

तद्‌भव– पत्ता, नाक, मोर, घर, दूध, काम, भौंरा, मुँह

(ङ) अंग्रेज़ी– इंज़न, मशीन, कॉलेज़
फ़ारसी– बाग, गुलाब
अरबी– औरत, किताब, नमक
हिंदी– शर्म।

(च) छात्र स्वयं करें।

पाठ-5 अनेकार्थी शब्द [Words with various meanings]

(क) पय–दूध, गुरु–शिक्षक, जड़–मूर्ख, गति–हालत,
जाल–छल, वंश–खानदान

(ख) 1. तालाब 2. मूर्ख 3. वरदान 4. शिक्षक

(ग) सूत–सारथी, धागा, तीर–किनारा, बाण, वार–दिन, आक्रमण,
अंबर–आकाश, वस्त्र, पत्र–चिट्ठी, पत्ता, हार–माला, पराजय।

(घ) वर–दूल्हा, श्रेष्ठ, दल–पक्ष, सेना, अक्ष–धुरी, कील, हरि–इंद्र, सिंह
घट–कम, घड़ा

(ङ) छात्र स्वयं करें।

(च) 2. (द) 3. (द) 4. (स) 5. (ब) 6. (द)
7. (स) 8. (अ) 9. (अ) 10. (द)

पाठ-6 एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द
[Words apparently similar in meaning]

(क) 1. आयु 2. पाप 3. व्यय 4. पत्नी
5. निधन 6. गूँथ 6. स्नेह

(ख) 1. आलोचना–आलोचकों का कार्य साहित्यिक पुस्तकों की आलोचना करना होता है।
निंदा–मनीषा दूसरों की निंदा करके ऐसा अनुभव करती है कि जैसे सभी उससे निकृष्ट हैं।

2 आधि–आधि के कारण रवि दिन-प्रतिदिन दुबला होता जा रहा था।
व्याधि–ठीक से खाना न खाने व रात-दिन मेहनत करने के कारण रमेश को कई व्याधियों ने घेर लिया था।

3. भक्ति–मीराबाई की श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति अगाध थी।
श्रद्धा–हमें अपने बड़ों के प्रति श्रद्धा का भाव रखना चाहिए।

4. अनुज–महेंद्र का अनुज कमलेश बहुत शरारती है।
अग्रज–मेरे अग्रज पढ़ने में बहुत होशियार हैं।

(ग) लाल किला–अमूल्य, बंदूक–अस्त्र
महाभारत–ग्रंथ, आम–पका

(घ) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)

पाठ-7 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द [Homophones]

(क) कपाट, कृपाण, मातृ, नाग

(ख) 1. प्रणाम 2. ओर 3. हंस 4. बालू
5. द्रव 6. मातृ 7. मति

(ग) 1. अभय – निडर – पवन एक अभय बालक है।
उभय – दोनों – कोर्ट में जज ने उभय पक्षों की बात सुनकर निर्णय दिया।
2. नीर – पानी – तालाब का नीर अत्यंत शीतल है।
नीड़ – घोंसला – शाम होते ही सभी पक्षी अपने नीड़ में वापस आ जाते हैं।
3. जलज – कमल – जलज हमारा राष्ट्रीय पुष्प है।
जलद – बादल – आकाश में काले जलद छाए हैं।
4. राज – शासन – अंग्रेज़ों ने कई वर्षों तक भारत पर राज किया।
राज़ – गुप्त बात – हमें अपने राज़ किसी को बताने नहीं चाहिए।

(घ) 1. अन्न–अनाज 2. जूठ–अपवित्र
अन्य–दूसरा झूठ–असत्य
3. अलि–भँवरा 4. तप–तपस्या
आली–सखी ताप–गरमी
5. नग–पर्वत 6. हिम–बर्फ़
नाग–साँप हेम–सोना

पाठ-8 विपरीतार्थक (विलोम) शब्द [Antonyms]

(क) ज्ञान–अज्ञान, चंचल–स्थिर, कोमल–कठोर,
अर्थ–अनर्थ, लौकिक–अलौकिक, निरक्षर–साक्षर,
सुख–दुख, एक–अनेक, मानव–दानव,
ऊँच–नीच, आशा–निराशा, अपना–पराया,

(ख) शिष्ट–अशिष्ट, कपूत–सपूत, आकाश–पाताल,
सगुण–निर्गुण, आय–व्यय, उन्नति–अवनति

(ग) 1. अस्त 2. रात 3. जीत 4. सौभाग्य
5. पराधीन 6. नरक 7. अनुत्तीर्ण 8. असभ्य

(घ) 1. (ब) 2. (स) 3. (स) 4. (अ)
5. (स) 6. (ब) 7. (ब)

(ङ) 1. अशिष्ट 2. सुर 3. प्राचीन 4. वीर 5. हानि
6. अशुभ 7. स्तुति 8. रंक 9. स्वर्ग 10. मृत्यु

पाठ-9 पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द [Synonyms]

(क) नदी, सरिता घोड़ा, घोटक चाँद, शशि
दुग्ध, दूध बादल, जलद

(ख) 1. तट, तीर 2. अमी, सुधा
3. हवा, समीर 4. देवेश, देवेंद्र
5. भँवरा, अलि 6. अंबा, माँ
7. जगत, जग 8. नृप, महीप

(ग) दिन–दिवस, वासर सोना–हेम, कंचन
धरती–धरा, भू अँधेरा–तम, तिमिर
इच्छा–कामना, चाह काया–शरीर, तनु
लक्ष्मी–चंचला, रमा

(घ) 1. यह धरती बहुत उपजाऊ है।
2. बच्चों के लिए दूध पीना आवश्यक है।
3. आकाश में काले बादल छा गए।
4. पौधे पर फूल खिले हैं।
5. बाबा भारती को अपने घोड़े से बहुत प्रेम था।
6. अनीता ने पीले वस्त्र पहने हैं।
7. मीरा के नेत्र सुंदर हैं।

(ङ) 1. (ब) 2. (द) 3. (अ) 4. (द) 5. (ब)
6. (द) 7. (द) 8. (द) 9. (द) 10. (ब)

पाठ–10 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
[One Word Substitution]

(क) 1. दुर्गम 2. शैव 3. निराकार 4. सामाजिक
5. विधवा

(ख) सदा रहने वाला–शाश्वत जिसके मन में कपट हो–कपटी
आकाश को चूमने वाला–गगनचुंबी जिसके पास धन न हो–निर्धन
जो किसी का पक्ष न ले–निष्पक्ष जो कभी बूढ़ा न हो–अजर

(ग) 1. अनाथालय 2. जलचर 3. अनाथ 4. भूतपूर्व
5. मांसाहारी 6. वैष्णव 7. उदार 8. निर्मम

(घ) 1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (स) 5. (स)
6. (अ) 7. (स) 8. (अ)

(ङ) 1. इस महल में कई ऐतिहासिक चीज़ें हैं।
2. कबीर के दोहों में कही गई बातें अनुकरणीय हैं।
3 दुश्चरित्र लोगों का साथ नहीं देना चाहिए।
4. कामचोर लोग कभी सफल नहीं होते।
5. कॉर्बेट पार्क घूमना रोमांचकारी अनुभव रहा।

पाठ–11 शब्द निर्माणः उपसर्ग [Prefix]

(क) 1. वे शब्दांश, जो किसी शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं। उदाहरणार्थ–'रिक्त' शब्द में 'अति' उपसर्ग लगाकर 'अतिरिक्त' शब्द बनता है।
2. बेदाग, अहिंसा, कुरूप, निबंध, उपहार, सुपुत्र

(ख) सहचर, सहमति; अवनति, अवकाश; आजन्म, आहार;
गैरहाज़िर, गैरकानूनी; अधिपति, अधिकार; कमज़ोर, कमतर

(ग)	ना + दान	निर् + आशा	अति + अंत	ना + लायक
	सह + पाठी	आ + जीवन	कु + संग	अ + हिंसा
	प्र + गति	सत् + संग	अ + भाव	उत् + थान

(घ.) 1. (द) निर् 2. (ब) चिर 3. (स) सम् 4. (द) अधः 5. (अ) प्र

(ङ) 1. (स) अक्ष 2. (ब) तम 3. (अ) मरण 4. (ब) आत्मा 5. (अ) गुण

पाठ–12 शब्द निर्माणः प्रत्यय [Suffix]

(क) 1. जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं। उदाहरणार्थ– 'रसोई' शब्द में 'इया' प्रत्यय लगने के बाद 'रसोइया' शब्द बनता है।

2. ई– धोबी, तैराकी इका– गायिका, लेखिका आई– पढ़ाई, लिखाई
अंत– रटंत, उड़ंत इक– मासिक, धार्मिक ला– पगला, अगला
गुना– दुगुना, चौगुना ईन– नमकीन, शौकीन

(ख) रंग–ईन = रंगीन मोटा–आपा = मोटापा
धोना–आई = धुलाई बालक–पन = बालकपन

(ग) 1. त्व 2. कार 3. आस 4. इका 5. हार
6. आ 7. आवा 8. ता

(घ) धनवान – वान = दयावान लालिमा – इमा = गरिमा
गायिका – इका = नायिका तैराक – आक = चालाक
पुजारिन – इन = सुनारिन

(ङ) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(च) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (अ)

(छ) 1. बलवान– दूध पीने से बच्चे बलवान बनते हैं।
2. अवगुण– हमें सद्‌गुणों को अपनाते हुए अवगुणों से स्वयं को दूर रखना चाहिए।
3. अपमान– रविकांत जब देखो तब, अपने नौकर का अपमान ही करता रहता है।
4. बचपन– बचपन में सभी बहुत शरारतें करते हैं।
5. दयावान– दयावान व्यक्ति दूसरों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।
6. राष्ट्रीय– सत्यमेव जयते भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य है।

पाठ–13 शब्द निर्माणः समास [Compound]

(क) 1. जब दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाए जाते हैं, तो उस प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं। उदाहरणार्थ 'घनश्याम'। घन के समान श्याम है जो अर्थात कृष्ण।

2. जिस समस्त पद का प्रथम पद संख्यावाचक विशेषण हो, उसे 'द्‌विगु समास' कहते हैं।

3. जिस समास के दोनों पदों में 'विशेषण–विशेष्य' अथवा 'उपमान–उपमेय' का संबंध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

(ख)

	समास विग्रह	समास भेद
1.	जितना उचित हो	अव्ययीभाव
2.	स्वर्ग को गया हुआ	तत्पुरुष
3.	गुण और दोष	द्वंद्व
4.	पेट भरकर	अव्ययीभाव
5.	तीन फलों का समूह	द्विगु
6.	नीली है जो गाय	कर्मधारय
7.	पाठ के लिए शाला	तत्पुरुष
8.	विष को धारण करने वाला अर्थात सर्प	बहुव्रीहि
9.	डाक के लिए घर	तत्पुरुष
10.	राजा का मंत्री	तत्पुरुष
11.	हाथ-ही-हाथ में	अव्ययीभाव
12.	गुरु के लिए दक्षिणा	तत्पुरुष

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)
5. (✗) 6. (✗) 7. (✓)

(घ) 1. पीतांबर 2. राहखर्च 3. गुणहीन 4. चौराहा

(ङ) 1. (द) 2. (ब) 3. (स) 4. (स)
5. (अ)

(च) 1. (स) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब)
5. (अ) और (द)

(छ) 1. बहुव्रीहि समास– नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
कर्मधारय समास– नीला है जो कंठ
2. बहुव्रीहि समास– पीले अंबर धारण करने वाला अर्थात श्रीकृष्ण
कर्मधारय समास– पीला है जो अंबर
3. बहुव्रीहि समास– दस हैं आनन जिसके अर्थात रावण
कर्मधारय समास– दस हैं जिसके आनन

(ज) 1. गंगातट पर स्त्रियों ने दीपक जलाए।
2. राजकुमार शिकार खेलने गया।
3. राजा हर्ष दानवीर थे।
4. माता-पिता का सम्मान करना चाहिए।

(झ) (छात्र स्वयं करें।)

(ञ) जिस शब्द में पूर्व पद संख्यावाची हो तथा दोनों पद मिलकर समूह का बोध करवाते हों, वहाँ द्विगु समास होता है परंतु दोनों पदों के मेल से कोई अन्य अर्थ निकले, तो वहाँ बहुव्रीहि समास है। उदाहरणार्थ
1. दशानन– दश आनन (द्विगु समास) दश हैं आनन जिसके अर्थात रावण (बहुव्रीहि)
2. चतुर्भुज– चार भुजाएँ (द्विगु) चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात विष्णु (बहुव्रीहि)

पाठ–14 संज्ञा [Noun]

(क) 1. किसी वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं। संज्ञा के पाँच भेद हैं।
क. व्यक्तिवाचक संज्ञा– अमेरिका, नेल्सन मंडेला
ख. जातिवाचक संज्ञा– बंदर, पेड़
ग. भाववाचक संज्ञा– मिठास, विनम्रता
घ. द्रव्यवाचक संज्ञा– पानी, सोना
ङ. समुदायवाचक संज्ञा– टोली, कक्षा

2. जिस संज्ञा शब्द से किसी द्रव पदार्थ या धातु का बोध हो, उसे 'द्रव्यवाचक संज्ञा' कहते हैं। उदाहरणार्थ–घी, चाँदी, दूध, पानी, सोना।

3. जिस संज्ञा शब्द से किसी गुण, दशा, माप, अवस्था या भाव का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

4. जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, विशेष वस्तु या विशेष स्थान का बोध होता है, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं। उदाहरणार्थ– कुतुबमीनार, महात्मा गाँधी आदि। जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के सभी व्यक्तियों, पदार्थों या स्थानों का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरणार्थ– शिक्षक, पुस्तक आदि।

(ख) 1. बचपन, 2. सज्जनता, 3. गरमाहट, 4. हरियाली, 5. मोटापा,
6. मित्रता, 7. बुढ़ापा, 8. अपनापन, 9. बुराई

(ग) हरिद्वार, हिमालय, जापान, ताजमहल, कुतुबमीनार।

(घ) आदमी, देवता, घोड़ा, हिरण, अध्यापक

(ङ) 1. भाववाचक संज्ञा 2. गुरुता 3. समुदायवाचक संज्ञा
4. द्रव्यवाचक संज्ञा 5. संज्ञा

(च) कटुता–भाववाचक संज्ञा
बगीचा–जातिवाचक संज्ञा
कक्षा–समुदायवाचक संज्ञा
दूध–द्रव्यवाचक संज्ञा
चंद्रगुप्त–व्यक्तिवाचक संज्ञा

(छ) 1. ब 2. स 3. स 4. ब 5. अ

(ज) 1. (अ) 2. (द) 3. (अ) 4. (अ)

(झ) (छात्र स्वयं करें।)

पाठ–15 लिंग [Gender]

(क) 1. शब्द के जिस रूप से पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। इसके दो भेद हैं– पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

2. स्त्रीलिंग– दासी, अभिनेत्री, ललाइन, सास, नागिन, घोड़ी, अग्रजा, देवरानी, बाला
पुल्लिंग– नाई, गुड्डा, वीर, चूहा, सुत, माली, बाल, प्रिय, सेवक

(ख) राजा–रानी, आदमी–औरत

(ग) 1. (✘) 2. (✓) 3. (✘) 4. (✓)
5. (✘) 6. (✓) 7. (✓) 8. (✘)

(घ) 1. गायिका 2. चिड़िया 3. धोबिन 4. वधू
5. कवयित्री 6. सेठानी 7. छात्र 8. श्रीमान

(ङ) 1. सुनारिन, 2. रानी, 3. नागिन, 4. तेलिन,
5. छात्रा, 6. महोदया, 7. शिष्या, 8. आचार्या,
9. ब्राह्मणी

(च) 1. शेर, 2. इंद्र, 3. नायक, 4. चूहा
5. निर्माता 6. पाठक 7. संपादक 8. ठाकुर
9. मृग

(छ) 1. मालिन माला गूँथती है।
2. बालिका दौड़ रही है।
3. पुजारिन ने पूजा की।
4. वर्षा आने पर मोरनी प्रसन्न हुई।
5. अध्यापक अभी आए हैं।
6. बकरी पौधे खा गई।
7. सुरेश ने एक वृद्धा को सड़क पार कराई।
8. इस फ़िल्म में मेरी पसंदीदा अभिनेत्री है।

(ज) 1. (स) 2. (द) 3. (ब) 4. (द)

(झ) 1. (द) 2. (द) 3. (द) 4. (स)

पाठ–16 वचन [Number]

(क) 1. संज्ञा शब्दों के जिस रूप से उसकी संख्या (एक अथवा अनेक होने) का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
2. वचन के दो भेद होते हैं– एकवचन और बहुवचन। संज्ञा के जिस रूप से उसके संख्या में एक होने का पता चले, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे–पत्ता, छात्रा आदि। वहीं संज्ञा के जिस रूप से उसकी संख्या में एक से अधिक होने का बोध हो, उसे बहुवचन कहते है; जैसे– पत्ते, छात्राएँ आदि।

(ख) 1. अध्यापिका 2. गुड़िया 3. कलियाँ 4. पुस्तकें
5. आँखें

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) घर, राजा, हाथी।

(ङ) 1. घोड़े घास खाते हैं।
2. बच्चे खेल रहे हैं।
3. पंखे चल रहे हैं।
4. पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

(च) वधू–वधुएँ, तोता–तोते घोड़ा–घोड़े, माता–माताएँ, मक्खी–मक्खियाँ, तितली–तितलियाँ गुड़िया–गुड़ियाँ।

(छ) दावतें, कन्याएँ, रोटियाँ चाबियाँ, सभाएँ, बहुएँ, केले वस्तुएँ।

(ज) (छात्र स्वयं करें।)

(झ) 1. प्राण, 2. दर्शन, 3. लोग

(ञ) 1. वर्ग 2. जाति, 3. दल

(ट) (छात्र स्वयं करें।)

पाठ–17 कारक [Case]

(क) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया तथा दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। कारक के आठ भेद हैं– कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन।

2. वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद पर क्रिया का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

3. पवन नदी में तैर रहा है ⟶ अधिकरण कारक
पहाड़ से झरना निकलता है ⟶ अपादान कारक

(ख) 1. संबंध कारक 2. करण कारक 3. अधिकरण कारक 4. संप्रदान कारक
5. कर्म कारक 6. संप्रदान कारक 7. संबोधन कारक 8. अपादान कारक

(ग) का, के, को, के, में, की, के, से

(घ) 1. कवि कविता लिखता है। कर्म कारक
2. निर्धनों को वस्त्र दो। संप्रदान कारक
3. नदी का तट सुंदर है। संबंध कारक
4. हे राम! मेरी सहायता करो। संबोधन कारक
5. नीलू पढ़ रही है। कर्ता कारक

(ङ) कर्ता – ने
कर्म – को
संप्रदान – के लिए
संबंध – का, के, की
अधिकरण – में, पर

(च) **(i) (✗)** **(ii) (✓)** **(iii) (✓)** **(iv) (✗)**

(छ) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ)

(ज) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (ब)

(झ) (छात्र स्वयं करें।)

पाठ–18 सर्वनाम [Pronoun]

(क) 1. जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर आते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। सर्वनाम के छह भेद होते हैं–

पुरुषवाचक सर्वनाम – मैं खेलने जा रहा हूँ।
निश्चयवाचक सर्वनाम – वह मेरी सहेली है।
अनिश्चयवाचक सर्वनाम – किसी ने फूल तोड़ दिए।
संबंधवाचक सर्वनाम – जिसकी लाठी उसकी भैंस।

प्रश्नवाचक सर्वनाम – क्या खो गया है?

निजवाचक सर्वनाम – अपना काम स्वयं करो।

2. जो शब्द बोलने वाले, सुनने वाले या जिसके बारे में कुछ बात की जाए, उसके लिए प्रयुक्त हों, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।
3. जो सर्वनाम बोलने वाले के लिए प्रयुक्त होता है, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।
4. पास या दूर की निश्चित वस्तु या व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
5. जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलने वाला या लिखने वाला अपने लिए करता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(ख) "शीला यह देख, अखबार में हमारे शहर की खबर छपी है।" "क्यों मज़ाक करती हो बिटिया! मैं पढ़ना नहीं जानती हूँ। मुझे तो बस बरतन माँजना ही आता है।" शीला की बात सुनकर गीतू ने कहा– "शीला, कल से मैं तुम्हें पढ़ाऊँगी।" गीतू की माँ ने सुना तो वह बोल उठी– "शाबाश बिटिया! तुम सचमुच नेक काम करोगी।" किसी को अक्षर-ज्ञान देना तो मानवता की सच्ची सेवा करना होगा। जो ऐसा करता है वह देश का सच्चा शुभचिंतक है।"

(ग) 1. प्रश्नवाचक सर्वनाम 2. निश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. संबंधवाचक सर्वनाम 5. पुरुषवाचक सर्वनाम

(घ) 1. मैंने 2. क्या 3. जो, वे 4. स्वयं 5 कुछ

(ङ) पुरुषवाचक–मैं, हम, वे निश्चयवाचक–यह, वह
अनिश्चयवाचक–कोई संबंधवाचक–जो-सो
प्रश्नवाचक–कौन निजवाचक–आप ही, स्वयं

(च) 1. क्या 2. मुझे, कुछ 3 मेरे 4 तुमने

पाठ-19 विशेषण [Adjective]

(क) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। विशेषण के चार भेद हैं– गुणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, सार्वनामिक विशेषण।

2. जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे– माँ ने भिखारी को एक कंबल दिया। वहीं जो विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के परिमाण (नाप-तोल) का बोध कराते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे– गिलास में थोड़ा पानी बचा है।

(ख) 1. गुणवाचक विशेषण 2. संख्यावाचक विशेषण
3. सार्वनामिक विशेषण 4. परिमाणवाचक विशेषण
5. संख्यावाचक विशेषण

(ग) 1. दयालु, 2. जातीय, 3. राष्ट्रीय, 4. ऐतिहासिक, 5. सामाजिक, 6. आर्थिक, 7. दैनिक, 8. आदरणीय, 9. साप्ताहिक, 10. भारतीय

(घ) 1. ईमानदार सुंदर 2. सुस्त, फुर्तीले 3. मीठा 4. वसंती
5. सुंदर, बलवान

(ङ) विशेषण– नीला, हरी, गाँधी, सुंदर, खट्टा
विशेष्य– पेन, सब्ज़ियाँ, टोपी, लड़की, संतरा

(च) 1. परिश्रमी 2. सुंदर 3. दयालु 4. बड़ी 5. प्रसिद्ध

(छ) ठंडा–दूध, मोटा–आदमी, वीर–सैनिक, ज्ञानी–ब्राह्मण,
नीला–आकाश चचेरा–भाई लाल–गुलाब

(ज) मिठास ☒ शेर ☒ धनी ☑
मोटी ☑ क्रोधी ☑ ईर्ष्या ☒
ज़हरीला ☑ मानवीय ☑ मोर ☒

(झ) परिमाणवाचक विशेषण–दो लीटर, कुछ मिठाई, थोड़ा आटा, मन भर लकड़ी, पाँच किलो चावल
संख्यावाचक विशेषण–दस केले, पाँचों बहनें, कुछ मकान, सात लड़के, दूसरी लड़की

(ञ) 1. (अ) 2. (द) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

पाठ–20 क्रिया [Verb]

(क) 1. जिस शब्द से किसी काम का करना या होना प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं। कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया। वहीं प्रयोग के आधार पर क्रिया के छह भेद हैं–सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया।, अपूर्ण क्रिया।
2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।
3. जहाँ क्रिया का फल कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। वहीं जहाँ क्रिया का फल कर्ता पर पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
4. सकर्मक क्रिया में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है।
5. दो या दो से अधिक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग होने पर संयुक्त क्रिया का भेद सामने आता है।
6. जिस क्रिया की रचना संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण आदि शब्दों से होती है, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं, जैसे– हाथ से हथियाना, बात से बतियाना आदि।

(ख) हथियाना – नामधातु क्रिया, पढ़वाना – प्रेरणार्थक क्रिया,
सोकर – पूर्वकालिक खा चुका – संयुक्त क्रिया

(ग) 1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया 3. अकर्मक क्रिया 4. सकर्मक क्रिया

(घ) 1. झुठलाना 2. बतियाना 3. शर्माना 4. हथियाना

(ङ) 1. मेरे पिता जी दिल्ली जाएँगे।
2. नौकरानी ने आँगन धो दिया।
3. गुरु जी पाठ पढ़ा रहे हैं।
4. आकाश में बादल छा रहे हैं।
5. गाड़ी स्टेशन से जा चुकी थी।

(च) 1. पढ़ने 2. खिलाया 3. सुलाया 4. लिखने 5. रोने

(छ) 1. हमें किसी की वस्तु को हथियाना नहीं चाहिए।
2. वह खाना खाकर सो गया।
3. वह सो रहा है।
4. माँ माली से पौधे लगवाती है।
5. शेर दहाड़ा।

(ज) 1. (ब) 2. (द) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

पाठ–21 काल [Tense]

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं–वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल।
2. जहाँ भूतकाल की एक क्रिया दूसरी पर आश्रित हो, उसे हेतु–हेतुमद् भूतकाल कहते हैं; जैसे–यदि तुम परिश्रम करते, तो सफल होते।
3. भविष्यत् काल का साधारण रूप सामान्य भविष्यत् काल कहलाता है, वहीं भविष्यत् काल की जिस क्रिया में संदेह पाया जाए उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं।

(ख) 1. अपूर्ण वर्तमान काल 2. सामान्य भूतकाल 3. अपूर्ण वर्तमान काल
4. सामान्य भविष्यत् काल 5. संभाव्य भविष्यत् काल

(ग) 1. रसोइया खाना बना रहा था।
2. किसान हल चला रहा था।
3. रामदीन खेत को पानी दे रहा था।
4. गवैया गा रहा था।

(घ) 1. संभवत: इस वर्ष व्यापार में लाभ हो।
2. हम नैनीताल जाएँगे।
3. मोहित पढ़ रहा होगा।
4. माँ बाज़ार से आ गई हैं।
5. हमने दीपावली पर दीपक जलाए।

(ङ) 1. (i) वर्षा हुई।
(ii) वर्षा हुई थी।
(iii) वर्षा हो रही थी।
(iv) वर्षा अब हो चुकी होगी।
(v) वर्षा हो चुकी है।
(vi) यदि वर्षा होती, तो फसल अच्छी होती।
2. (i) वर्षा होती है।
(ii) वर्षा हो रही होगी।
(iii) वर्षा हो रही है।
3. (i) आज वर्षा होगी।
(ii) शायद आज शाम को वर्षा हो।

(च) 1. (स) संदिग्ध भूतकाल 2. (स) पूर्ण वर्तमान 3. (अ) संभाव्य भविष्यत्
4. (ब) काल 5. (ब) आसन्न भूतकाल

पाठ–22 अविकारी शब्द (अव्यय) [Indeclinable Words]

(क) 1. जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक या काल के कारण कोई परिवर्तन न आए, उन्हें 'अव्यय' (अविकारी शब्द) कहते हैं। ये पाँच प्रकार के होते हैं–क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात।

2. जो अविकारी शब्द क्रिया की किसी विशेषता को प्रकट करते हैं, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं। इसके चार भेद हैं–कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक, रीतिवाचक।

3. जिन शब्दों से हमें क्रिया के स्थान का पता चलता है, उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे–यहाँ, वहाँ, अंदर, बाहर आदि। वहीं जिन शब्दों से हमें क्रिया के होने के समय का पता चले, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–कल, आज, अभी, परसों आदि।

4. जो अविकारी शब्द क्रिया की किसी विशेषता को प्रकट करे, उसे क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे–हिरण तेज़ दौड़ रहा है। वहीं संबंधबोधक शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं; जैसे–पुल के नीचे नदी बहती है।

5. जो अविकारी शब्द दो शब्दों, वाक्य के अंशों और वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक या 'योजक' कहते हैं। इसके तीन भेद हैं–
संयोजक, विभाजक, विकल्पसूचक।

(ख) और–समुच्चयबोधक   के नीचे–संबंधबोधक
धीरे–धीरे–क्रियाविशेषण   वाह!–विस्मयादिबोधक
मात्र–निपात।

(ग) 1. परंतु   2. बल्कि   3. और   4. कि

(घ) 1. रीतिवाचक क्रियाविशेषण   2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण
3. रीतिवाचक क्रियाविशेषण   4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
5. कालवाचक क्रियाविशेषण

(ङ) 1. बिना   2. के पास   3. के नीचे   4. के लिए   5. के साथ

(च) 1. सावधान!   2. उफ़!   3. शाबाश!   4. क्या!

(छ) 1. वाह! भारत मैच जीत गया।
2. अरे! इतनी लंबी रस्सी।
3. छी:! यहाँ कितनी गंदगी है।
4. हाय! वह गिर पड़ा।
5. बाप रे! इतना गहरा कुआँ।

(ज) (छात्र स्वयं करें।)

(झ) 1. तेज़   2. और   3. आह   4. के अंदर

पाठ–23 वाक्य विचार [Syntax]

(क) 1. जिन शब्दों अथवा शब्दों के समूह का कोई सार्थक अर्थ बनता है, उसे वाक्य कहते हैं। रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–
1. सरल वाक्य   2. संयुक्त वाक्य   3. मिश्रित वाक्य

2. अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं–

1. विधानवाचक 2. निषेधवाचक 3. प्रश्नवाचक 4. संकेतवाचक
5. आज्ञावाचक 6. इच्छावाचक 7. संदेहवाचक 8. विस्मयवाचक

(ख) 1. वाह! कोयल कितना मीठा गाती है।
2. पिता जी खाना नहीं बनाते हैं।
3. क्या सान्या नृत्य करती है?
4. यदि पानी देते, तो फसल हरी-भरी रहती।

(ग) 2. कच्चा आम (कर्म का विस्तार) 3. मकई की रोटी (क्रिया का विस्तार)
4. लँगड़ा आदमी (कर्म का विस्तार)

(घ) 1. पंडित जी 2. माता जी 3. औरतें 4. रानी 5. पुजारी

(ङ) 1. विस्मयवाचक वाक्य 2. निषेधवाचक वाक्य
3. आज्ञावाचक वाक्य 4. इच्छावाचक वाक्य
5. संदेहवाचक वाक्य 6. विधानवाचक वाक्य

(च) 1. सरल वाक्य 2. मिश्रित वाक्य 3. मिश्रित वाक्य 4. संयुक्त वाक्य

(छ) 2. चालाक 3. दशरथ पुत्र 4. पांडु पुत्र

(ज) 1. गुरु द्रोणाचार्य ने पांडवों को शिक्षा दी।
2. पिता जी ने मेरा जन्मदिवस मनाया।
3. मूर्ख बंदर ने राजा की नाक काट दी।
4. छोटे जादूगर ने जादू दिखाया।
5. अमेरिका ने इराक पर आक्रमण कर दिया।

(झ) 1. (ब) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (अ)

(ञ) 1. हमें घर जाना है। 2. क्या आप खाना खाएँगे?
3. कुकर में दाल बन रही है। 4. हमने गृहकार्य कर लिया है।
5. वे लोग घर जा रहे हैं।

पाठ-24 विराम-चिह्न् [Punctuation]

(क) 1. प्रश्नवाचक चिह्न 2. विस्मयादिबोधक चिह्न 3. लाघव चिह्न
4. अल्पविराम 5. उद्धरण चिह्न 6. योजक चिह्न

(ख) 1. लोकमान्य तिलक ने कहा, "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"
2. हाय! उसे बहुत चोट लगी।
3. राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भाई थे।
4. अरे! तुम कब आए।
5. वीर सैनिक, आज चार साल के बाद भी मगध को हम जीत नहीं पाए।
6. खरगोश ने कहा–"कोई है माई का लाल कछुआ, जो हमें अब दौड़ में हरा सकता है।"

(ग) अर्धविराम (;) पूर्णविराम (।) प्रश्नवाचक (?)
विस्मयादिबोधक (!) योजक (-)

(घ) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (ब)

पाठ–25 मुहावरे और लोकोक्तियाँ [Idioms and Proverbs]

(क) 1. सेवा का फल अच्छा होता है।
2. सच्चे व्यक्ति को डरने की आवश्यकता नहीं।
3. ज़बरदस्ती गले पड़ना।
4. वस्तु कम परंतु चाहने वाले अधिक।
5. आपसी फूट से हानि।

(ख) 1. काला होना – काला नाग होना।
2. बेलना – पापड़ बेलना।
3. काला अक्षर बराबर – काला अक्षर भैंस बराबर।
4. पर थूकना – आसमान पर थूकना।
5. ईंट बजाना – ईंट से ईंट बजाना।

(ग) 1. चुराओगे 2. खीर 3. धो बैठोगे 4. का रंग उड़ गया
5. में पानी आ गया। 6. बँटाती है।

(घ) नौ–दो ग्यारह होना – भाग जाना
हवाई किले बनाना – ऊँची कल्पनाएँ करना।
आकाश को छूना – बहुत ऊँचे उठना
पेट में चूहे कूदना – भूख से अधीर होना
पापड़ बेलना – बहुत कष्ट उठाना
अच्छे दिन आना – भाग्य चमकना
छाती पर साँप लोटना – ईर्ष्या होना

(ङ) 1. (लांछित करना) – बिना सोचे–समझे किसी के चरित्र पर उँगली उठाना अनुचित कार्य होता है।
2. (स्वागत करना) – मेहमान के आने पर आँखें बिछाना भारतीय परंपरा है।
3. (मूर्खों में थोड़ा चतुर)– नरेश बहुत बुद्धिमान तो नहीं है लेकिन गणित का यह प्रश्न हल करके वह अंधों में काना राजा गिना जाने लगा है।
4. (अनपढ़ होना) – रामलाल के लिए पुस्तक पढ़ना काला अक्षर भैंस बराबर है।
5. (शंका होना) – रामनाथ जी की फैक्ट्री में पुलिस आने से सबको दाल में काला नज़र आने लगा।

पाठ–26 अपठित गद्यांश [Unseen Prose Passage]

1. (i) (ग), (ii) (घ), (iii) (ख), (iv) (घ), (v) (घ)
2. (i) (ग), (ii) (क), (iii) (घ), (iv) (ख), (v) (घ)
3. (i) (ग), (ii) (घ), (iii) (घ), (iv) (क), (v) (क)
4. (i) (ख), (ii) (क), (iii) (ग), (iv) (क), (v) (ग)
5. (i) (ख), (ii) (घ), (iii) (ख), (iv) (ग), (v) (ग)

पाठ–27 अपठित पद्यांश [Unseen Poem Passage]

1. (i) (घ),	(ii) (क),	(iii) (ग),	(iv) (घ),	(v) (ग)
2. (i) (क),	(ii) (ख),	(iii) (क),	(iv) (क),	(v) (ग)
3. (i) (ख),	(ii) (क),	(iii) (ग),	(iv) (घ),	(v) (घ)
4. (i) (क),	(ii) (ख),	(iii) (क),	(iv) (ग),	(v) (क)
5. (i) (घ),	(ii) (ख),	(iii) (घ),	(iv) (क),	(v) (ग)

पाठ–28 कहानी-लेखन [Story Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–29 पत्र-लेखन [Letter Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–30 अनुच्छेद-लेखन [Paragraph Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–31 निबंध-लेखन [Essay Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–32 चित्र-वर्णन [Picture Description]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–33 डायरी-लेखन [Diary Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–34 वाचन और श्रवण कौशल [Oral and Listening Skill]

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ–35 संवाद-लेखन [Dialogue Writing]

विद्यार्थी स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–1

विद्यार्थी स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र–2

विद्यार्थी स्वयं करें।